स्वतंत्रता दिवस की 34वीं वर्षगांठ पर लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी :-

स्थान : लालकिला,
नई दिल्ली।

दिनांक : 15.8.81

भारत के वासियो, मेरे भाईयो और बहनों।

आज फिर स्वतंत्र भारत की वर्षगांठ है। आप सबको मैं मुबारकबाद देती हूं। हर साल हम यहां आते हैं झंडा फहराने। ये कोई मामूली रीत या रस्म नहीं है, एक कर्तव्य है। क्योंकि ये दिन है जब हम याद करते हैं उन सालों को, जब भारत के सब धर्म के लोग, सब जातियों के लोग, सब भाषाओं के, सब प्रान्तों के लोग, बड़े और छोटे, स्त्री और पुरुष, बुजुर्ग और नौजवान -सब एक थे।

हमारा क्या नारा था, "सर जाये तो जाये, पर हिन्द आजादी पाये।" यह था हमारा नारा और इस लक्ष्य के लिए लोग अपनी गरीबी के ऊपर उठे, अपनी कठिनाईयों के ऊपर उठे, अपनी मानहीनता को भूले और आज़ादी की लड़ाई में तन-मन-धन अपना लगाया। कितने परिवार बरबाद हुए, कितनी लाखों जानें गयीं, कितनी जेल इतने भरे कि जगह नहीं। इस लाल किले में भी कैदी थे जो मौत के मुंह में से निकले। कोई गांव नहीं भारत में जहां अपनी बहादुरी की, साहस की, कहानी नहीं है। आज वो दिन है कि उन कहानियों को और उन स्वतंत्रता सेनानियों को और जितने लोगों ने चाहे वे हमारे अहिंसा और शान्ति के आंदोलन में थे, चाहे उन्होंने दूसरे रास्ते पकड़े, आज उन सबको हम याद करते हैं और उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

आज वो दिन है कि विशेषकर युवा पीढ़ी को ये पुरानी कहानी हमें सुनानी है। क्योंकि ये वो नींव जिसमें से ये नया भारत हमारा उठ रहा है। एक पौधा जो अभी भी कमजोर है जिसको अभी भी हमें अपने पसीने और अपनी मेहनत से सींचकर, संभाल के इसको बड़ा करना है जैसे कि भारत को हरा-भरा करने के लिए यहां के पेड़ और वृक्ष हमें लगाने हैं और संभालने हैं।

......2/-

एक साल पहले मैं यहां बोली थी । इस साल में, जैसे हर साल में बहुत से कष्ट आपके हुए, आपकी कठिनाईयों को मैं भली-भांति जानती हूं । जो कष्ट हैं, मैं केवल उनको प्रधानमंत्री के रूप से नहीं देखती हूं, एक महिला के रूप से देखती हूं, एक मां के रूप से देखती हूं ।तालियां। लेकिन अगर कष्ट और कठिनाई हुए और आज भी हैं तो इसमें शक नहीं कि कामयाबी और सफलतायें भी हमारी हुई और एक बड़ी सफलता जिसका कल ही उद्घाटन हुआ वो है "एप्पल" पहली बार आज के दिन इस समारोह में, केवल वो लोग जो सामने बैठे हैं वो नहीं, केवल वो लोग जो लाखों भारत के अलग-अलग भाग में हैं "एप्पल" द्वारा, इस उपग्रह द्वारा, इस समारोह में शामिल हो सक रहे हैं, सुन सक रहे हैं और देख भी सक रहे हैं । ।

एक देश जो इतने थोड़े साल पहले गुलामी में ~~फंसा~~ धंसा हुआ था, उसके लिए यह कोई छोटा काम नहीं है । लेकिन आप पूछेंगे कि अगर इतना बड़ा काम हम कर सकते हैं, इसके लिए हम अपने वैज्ञानिकों को और इंजीनियरों को बधाई देते हैं, जिन पर हमारा गर्व है और जिनके काम पर हम सबको खुशी होती है तो दूसरे छोटे काम हमसे क्यों नहीं पूरे होते । कीमतें क्यों नहीं हम काबू में ला सकते हैं । यह ठीक सवाल है । कीमतें अभी भी ऊंची हैं और मुझे मालूम है कि आपको कितनी परेशानी है मुझको है और विशेषकर के मेरी बहनों जिनको घर चलाना होता है । लेकिन ये मैं आपसे कहना चाहती हूं कि कीमतें कम नहीं हुई, लेकिन कीमतों के बढ़ने की गति पर जरूर कुछ काबू हुआ है और आहिस्ते-आहिस्ते वो काबू बढ़ रहा है ।

कीमतें बढ़ने के अनेक कारण होते हैं । एक तो अगर उत्पादन कम होता है और उसको बढ़ाने में हम लगे हैं । लेकिन दूसरा है कि दुर्भाग्य से ऐसे लोग हैं हमारे देश में, और दूसरी जगह भी जो ऐसी समस्या से स्वयं लाभ उठाने की कोशिश करते हैं, अपने स्वार्थ के हित में, देश के हित को, देश के स्वार्थ को भूल जाते हैं । जमाखोरी, कालाबाजार, मुनाफाखोरी, ~~ये~~ यह सब चीजें आज भी चालू हैं और क्योंकि जो लोग ये समाज विरोधी काम करते हैं इनको कुछ छूट मिल गयी थी कुछ साल पहले, तो अभी तक हमारे पकड़ाव में नहीं आये हैं । कई जगह कुछ असर पड़ा है । लेकिन जितना होना चाहिये उतना नहीं ।

लोग हमसे मांग करते हैं कि सख्ती क्यों नहीं करते । लेकिन थोड़ा भी सख्त कदम अगर उठाने की कोशिश करते हैं तो कितने अड़ंगे उसके रास्ते में आते हैं । कदम उठाये गये हैं । कुछ उसका असर पड़ा है और ऐसे कदम, जो समाजविरोधी तत्व हैं, उनके खिलाफ जरूर और उठाये जायेंगे ।

कुछ कमियाँ मौसम की वजह से, प्रकृति की वजह से, कभी-कभी हमारी भूल की वजह से भी होती हैं। हमारी सारी कोशिश है कि उत्पादन बढ़ायें। कृषि का उत्पादन तो बढ़ा है। आप सबको मालूम है इस साल की फसल बहुत सुन्दर है। आप पूछेंगे कि गेहूं का उत्पादन अगर अच्छा है तो बाहर से गेहूं क्यों खरीदा। इसलिए खरीदा कि हमें मालूम हुआ कि यहां पे भी वो ही कोशिश हो रही है कि कुछ लोग उसको खरीदकर रख हैं, मौके पर उससे फायदा उठायें, उसके दाम बढ़ायें और शायद इसके बीच में बहुत से लोगों तक विशेषकर के जो सबसे गरीब या दूर रहने वाले लोग हैं, उनको भारी कष्ट हो। वो कारण है कि हमने देखा कि इस वक्त हमारी तुरन्त ज़रूरत नहीं है और बाहर आसानी से सस्ते में मिल रहा है तो हरेक समस्या के लिए हर समय तैयार रहना चाहिये। इसलिए हमने उसको रखा कि ये इस कष्ट से हम अपने लोगों को बचा सकें।

इसी प्रकार से उद्योग का उत्पादन भी बढ़ा है। हमारा सारा ज़ोर रहा ह उन चीज़ों को बढ़ाने का जो बुनियादी ढांचा है उन्नति की और विकास की और जिस पर सब दूसरा उत्पादन चाहे किसान का हो, चाहे कारखाने का हो, वो निर्भर है - यानी ऊर्जा, कोयला, रेल - इन सब में भी बढ़ोतरी हुई है। लेकिन यह मानना होता है कि जितनी ज़रूरत है वो हम पूरी नहीं कर सके हैं।

इतने वर्षों में समाज सेवायें बहुत बढ़ी हैं, सार्वजनिक सेवायें - जैसे स्वास्थ्य का प्रबन्ध, शिक्षा का प्रबन्ध और ऐसी दूसरी चीज़ें। लेकिन वो तब भी काफी नहीं है। तब भी लोगों तक पहुंच नहीं सकती। क्यों? क्योंकि जितनी वो बढ़ती जाती है उससे ज़्यादा ज़ोर से हमारी आबादी बढ़ती रहती है। तो कितने भी नये स्कूल और कालेज और यूनिवर्सिटी खुलें, कितने भी नये अस्पताल और चिकित्सालय खुलें, हमेशा जितने लोगों को ज़रूरत है उनकी संख्या उनसे ज़्यादा होती है। चाहे मंहगाई का प्रश्न है, चाहे आबादी का प्रश्न है, चाहे दूसरे प्रश्न हैं, इन सबों में जब तक आप सब लोगों का पूरा सहयोग नहीं मिलेगा तब तक काम पूरा नहीं हो सकता है। सरकार/भारी जिम्मेवारी है। आपने अपने मत से वो जिम्मेवारी दी। लेकिन लोकतंत्र में साधारण नागरिक का भी उतना ही बड़ा कर्तव्य होता है। बहुत कुछ फिजूलखर्ची अगर न हो, अगर लोग तैयार न हों कि कितने भी दाम बढ़ें, वो खरीदारी करते ही चले जायें, चाहे उस वस्तु की आवश्यकता हो या नहीं। इससे वातावरण बिगड़ता है। समाजविरोधी तबके और मैं तो कहूंगी कि जो इस कठिनाई के समय समाज के विरुद्ध काम करता है वो देश के विरुद्ध भी काम करता है। उनको भी ऐसा थामा जाये। कानून बनते हैं, नियम बनते हैं, ...4/-

लेकिन हमेशा उस पर पूरा अमल नहीं हो सकता क्योंकि अमल करना केवल सरकार का काम नहीं होता है। अलग-अलग स्तर पर बहुत से लोग उस काम कोपूरा करने में लगते हैं और हीं भी थोड़े से चूक जायें तो सारा कार्यक्रम, सारी नीति बिगड़ सकती है। इसमें भी हम आप सबका सहयोग चाहते हैं। मेरे कहने का मतलब ज़रा भी ये नहीं है कि आप कानून को अपने हाथ में लीजिए। लेकिन यह ज़रूर है कि समाज में ऐसा वातावरण बनाइये कि ऐसे जो लोग गलत काम करना चाहते हैं वो पनप ही नहीं सकें, वो सामने आने में शरमा जायें, लोग उनको पहचानें ऐसा वातावरण आप बनायेंगे तो आप देखियेगा कि कितनी जल्दी सुधार होगा। तालियां।

आज कुछ भी हम करते हैं जैसे ये बाहर से गेहूं खरीदा तो कुछ लोगों ने इसके खिलाफ आवाज़ उठायी। कौन सी आवाज़ें हैं? उनके पीछे कौन है। आवाज़ तो कोई भी उठाता है क्योंकि लोग उकसा देते हैं। लेकिन उनके पीछे कौन लगे हैं। कौन ताकत है। वो जो चाहते हैं कि अनाज के भाव बढ़ें, बाजार में बढ़ें ये नहीं कि किसान को ज्यादा मिलें वो तो उस कोशिश में तो हम भी लगे हैं।

इसी प्रकार से बहुत सी चीज़ें हैं जो कभी अदालत में फंस जाती हैं, कभी कोई दूसरे अड़गे होते हैं उसके कारण फंसी रहती हैं, देर हो जाती है। एक नया वातावरण हमको अपने समाज में बनाना हैं कि हरेक समझे कि उसका व्यक्तिगत रूप से क्या कर्तव्य है। जैसे अभी मैंने स्वतंत्रता सेनानियों की बात की। उस स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने में आप सब सिपाही हैं। आप सबको उसी प्रकार से, उसी त्याग और सेवा-भावना से इस काम में लगना है। ये काम कोई दूसरे का नहीहै। किसी सरकार का नहीं है, किसी राजनैतिक दल का नहीं है। ये काम है भारत का, भारत के साधारण लोगों का, गरीबों का, पिछड़े हुए वर्गों का, मध्यम वर्ग का, सभी लोग हैं। क्योंकि आज जो हालत है उसमें कुछ लोग शायद मुनाफा बना सकें, लेकिन अगर देश मजबूत नहीं होता है तो उस मुनाफे का उनको कुछ बहुत दिन लाभ नहीं रहेगा, बहुत दिन खुशी उनको नहीं रहेगी। इन सब बातों पर हमको ध्यान देना है।

आजकल की दुनिया में केवल हमारे देश न नहीं, लेकिन जहां-जहां भी मैं गयी हूं, जहां-जहां दूसरे गये हैं और वहां का वर्णन किया है हम देखते हैं कि हिंसा, अपराध, अशान्ति फैली हुई है। हमें दूसरे देश में क्या होता है उससे मतलब नहीं, गो कि उसका प्रभाव यहां पड़ता है। हमें देखना है कि अपनी मनोवृत्ति में हम सुधार लायें, अपनी मानवता को बढ़ायें, अपने समाज में कुछ नैतिक मूल्यों को फिर से लायें जो सब धर्मों

...5/-

दुनियाभर है जिससे कि वे गलत रास्ते पर केवल हम भारत के लोग नहीं. मैं समझती हूं सारी मनुष्य जाति ने एक गलत मोड़ ले लिया है । इतनी बुद्धि होते हुए, इतनी जानकारी होते हुए इतनी क्षमता होते हुए, बजाय इस जानकारी को, इस ताकत को हम अच्छाई में लगायें, किस चीज़ में लग रही है । हम देख रहे हैं कि बड़ी-बड़ी ताकतें अपना धन खर्च कर रही हैं किस में ? विकास के कार्यों में नहीं, गरीब लोगों की सहायता में नहीं, लेकिन हथियार बढ़ाने में । बड़े से बड़े, नये-नये प्रकार के हथियार किसलिए ? जिससे या तो जानें नष्ट हों या मकान नष्ट हों व फसल नष्ट हों या देश नष्ट हो । ये अपनी जानकारी से मनुष्यजाति कर रही है । क्या यह रास्ता भारत का है ?

तो आज समय आया है जब प्रत्येक भारतीय इन बातों पर गहराई से ज़रा विचार करे और उत्तरदायित्व को समझे । लेकिन दूसरों को हम कुछ बतायें, उसके पहले अपने देश को ठीक करना है । ये देश जहां शान्ति रही, जहां लोग मिल-जुल के हमेशा रहते थे । कभी-कभी लड़ाई-झगड़ा तो सभी जगह होता है, लेकिन क्यों छोटी सी बात पे दंगा हो जाता है । कभी धर्म का नाम, कभी जाति का नाम, कभी भाषा का नाम । ये चीज़ें हैं जो हमारी प्रगति में, हमारी उन्नति के रास्ते में बाधा डालती हैं । इन चीज़ों को हमें रास्ते में से हटाना है । अगर इसके पीछे कोई कारण है तो उसको ढूंढकर उसको जड़ से खोदकर हटाना है । लेकिन किसी भी तरह से ऐसा वातावरण बनाना है कि कोई रुकावट हमारे विकास के कार्य्य में, हमारी उन्नति की गति में, हमारी प्रगति के रास्ते में कोई रुकावट न आये । ये है स्वतंत्रता दिवस का संदेश इस साल और हर साल ।

एक पड़ाव हमने जीता लेकिन अभी भी रास्ता बहुत लंबा है । हमारे चारों तरफ हथियार बढ़ रहे हैं और इससे कोई केवल भारत को नहीं, इस सारे इलाके को और हम समझते हैं सारी दुनिया को खतरा बढ़ रहा है और खतरे के वक्त हानि सबको होती है । जो गरीब होते हैं जिनके पास कमी होती है - वस्त्र की या धन की या किसी चीज़ की, उन पर बोझ ज्यादा पड़ता है । तो इसलिए औरों को तो सतर्क रहना ही है, हम भारतवासियों को और भी ज्यादा सतर्क रहना है, जागरूक रहना है । हमें समाज को एक नया मोड़ देना है । बहुत सी बातें अपने पुराने इतिहास और परम्परा से सीखनी हैं । अगर अंधविश्वास और कुछ बुरी बातें हैं तो ज़रा भी झिझकना नहीं चाहिये उनको अलग कर देने के लिए । हमें अपने में मज़बूत हम होंगे । दुख और कष्ट तो सबके सामने आते हैं, व्यक्ति के सामने और देश के सामने । मेरे ऊपर, एक मां के दिल पर

क्या बीता है. आप सब जानते हैं । लेकिन उससे बड़ा है मेरा कर्तव्य आप सबके प्रति जो मेरे बालक के समान हैं ।(तालियां) और इसीलिए इससे न मैं रुक सकती हूं और न आप रुक सकते हैं । समय किसी के लिए कभी ठहरता नहीं है । हमारे बच्चे बढ़ रहे हैं चाहे आप उनकी मदद करें चाहे नहीं । उनकी. हमारे लोगों की. मांगें बढ़ रही हैं और ठीक बढ़ रही हैं क्योंकि अगर कुछ लोगों को मिलता है तो दूसरों को. गरीबों को. पिछड़े हुए लोगों को क्यों नहीं वो चीजें मिलें ।

तो इसलिए हम सबको इस वक्त ये एकता की भावना. मजबूती की भावना रखनी बढ़ानी हैं । अपने पड़ोसी देशों से और दूसरे देशों से हमने हमेशा दोस्ती की कोशिश की । जब उन्होंने हमको ठुकराया. हम पर आक्रमण किया. तब भी हमने आक्रमण का सामना जरूर किया और हिम्मत से किया और ये मौका है जब मैं अपनी सेनाओं के बहादुर जवान और अफसरों को आप सबकी तरफ से फिर से बधाई और शुक्रिया करती हूं जिस प्रकार से उन्होंने हमारी सीमाओं को सुरक्षित रखा है और मुझे मालूम है कि हमेशा रखेंगे ।

लेकिन हमारी कोशिश है कि लड़ाई न हो । हमारी कोशिश है कि दोस्ती हो पास के देश और दूर के देश । इसको कोई कमजोरी न समझे । ये कमजोरी के कारण नहीं है। ये आदर्शों के कारण हम करते हैं ।

हमारी कोशिश है कि एक आदर्शवादी जीवन हमारे देश का रहे और हमारी नीति रहे । हमारी नीति है कि सब भाग भारत के आगे बढ़ें चाहे पहाड़ी इलाके हों. चाहे रेगिस्तान हों. चाहे जंगलात में रहने वाले लोग हों. सबके पास पहुंचने चाहिये नौकरी के मौके और पंचवर्षीय योजना में किसान. मजदूर. विद्यार्थी. हरिजन. आदिवासी. गरीब लोग. मध्यम वर्ग सभी के लिए कुछ न कुछ कार्यक्रम हैं और करोड़ों नये नौकरी के मौके उसमें से लोगों के लिए खुलेंगे और मुझे विश्वास है कि हमारे नौजवान उसका पूरा फायदा उठायेंगे और खुद कैसे अपने काम करें और नये मौके निकालें उसमें भी वो लगे रहेंगे । हमेशा हमारी कोशिश रही कि किसान के लाभ के कार्यक्रम आगे बढ़ायें और मजदूरों को भी हम आराम पहुंचायें ।

कुछ गलतफहमी हुई है क्योंकि हाल में एक ऐसी आर्डिनेंस निकाली गयी जो आवश्यक सार्वजनिकसेवायें जो हैं उसमें हड़ताल न हो । मैं विश्वास दिलाना चाहती हूं कि अपने मजदूरों भाईयों को कि ये उनके विरुद्ध नहीं है । कभी न हम चाहते हैं और न कभी भी हम उनको किसी प्रकार से दबायेंगे या कुछ कष्ट पहुंचायेंगे । लेकिन ये आवश्यक जो

.....7/-

सार्वजनिक सेवायें हैं इनको तो चालू रखना है। केवल इसलिए नहीं कि सरकारी कार्यक्रम हैं, लेकिन इसलिए इस वक्त देश का कल्याण इसमें है. साधारण नागरिक को इन चीजों की जरूरत है। देश की मजबूती को, देश की रक्षा को इनकी जरूरत है। मजदूरों ने हमेशा अपनी जिम्मेदारी निभायी है और मुझे पूरा विश्वास है कि वो और हमारे किसान भाई और दूसरे सब वर्ग के भाई, हमारे बुद्धिजीवी, इत्यादि अपनी ये जिम्मेदारी हमेशा निभाते रहेंगे।

आज एक खास दिन है रक्षाबंधन का दिन। ये कोई धार्मिक त्योहार नहीं है। एक सामाजिक त्योहार है, भाई-चारे का, मैत्री-दोस्ती का। ये दिन है जब लोग दूसरों से दोस्ती का हाथ फैलाते हैं - किसलिए? कि एक-दूसरे की रक्षा हो। हम सब दुनियावालों से कहते हैं कि हमारा साथ दें शान्ति की रक्षा करने में, मानव जाति की रक्षा करने में और अपने देशवासियों से हम कहते हैं कि इस दिन को वो मनायें, केवल भाई-बहन का रिश्ता नहीं, लेकिन भारत-माता की रक्षा हम कैसे करें, भारत माता में एकता कैसे और मजबूत रखें और किस प्रकार से हरेक अपने को देश का रक्षक समझें।

शुरू में एक पुराना नारा या पुराना गाना का मैंने एक वाक्य आपको सुनाया था। आखिर में, मैं कहना चाहती हूं कि इस झण्डे के नीचे हम खड़े हैं, ये झंडा केवल कपड़े का टुकड़ा नहीं है, ये प्रतीक है जो आजादी की लड़ाई में खून बहा, बाद में अनेक लड़ाईयां, जो हमारी सीमा पर हुईं, उसमें हमारे बहादुरों का खून बहा, जो लोग आज भी अपने पसीने से भारत को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं, जो हमारे होनहार नौजवान हैं, उन सबों का ये एक प्रतीक है। हमारा झण्डा, हमारा राष्ट्रगान ये दो मामूली चीजें नहीं है। ये हैं जो देश को संग बांधती हैं और इसलिए आज आप सबकी तरफ से मैं कहना चाहती हूं "शान न इसकी जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।" ।तालियां।

अब आप सब मिलकर मेरे संग तीन बार जयहिन्द बोलियेगा। बच्चे तो बोलते ही हैं, मेरी आशा है कि जितने लोग यहां सामने बैठे हैं, पार्लियामेंट के मेम्बरान और दूसरे बहुत-बहुत बड़े लोग, वो भी नारे में शामिल होंगे जो हमारे देश की एकता और मजबूती का नारा है।

"जयहिन्द", "जयहिन्द" "जयहिन्द" ।तालियां।

x:x:x:x:x:x:x
x:x:x:x:x
x:x:x
x
:
x